Home-Science 27-7-2020

Q. ग्रामीण विकास के लिए प्रौढ़-शिक्षा के महत्व का वर्णन करें?

Ans निरक्षरता किसी भी देश के लिए अभिशाप होता है। आज विश्व भर के ऐसे देश जहां की अधिकांश जनता ग्रामीण क्षेत्र में रहती है। ये वहीं ग्राम है जहाँ अनेक ऋषि-मुनियों तपस्वी विदुषियों और मनीषियों ने जन्म लिया और उन्हें अपनी कर्मभूमि बनाया। परन्तु अब सदियों की उपेक्षा और वर्षों की गुलामी से इन ग्रामीण क्षेत्रों में अज्ञानता का अंधकार छा गया है। ग्रामीण अशिक्षित ही नहीं बल्कि निरक्षर भी है। आज निरक्षरों का विशाल जन-समूह सरकार के लिये चुनौती बन गया है। निरक्षरता से निरक्षरता को ही जन्म दिया। ऐसे प्रौढ़ जो स्वयं निरक्षर है, भावी पीढ़ी को साक्षर बनाने में तनिक भी रुचि नहीं रखते हैं। वे अपना काम अंगूठा छापकर चलाते हैं और स्वयं अपने परिवार को अति कारुणिक स्थिति में रखने के लिए पूरी तरह से जिम्मेवार है।

प्रौढ़ शिक्षा, औपचारिक शिक्षा केवल औपचारिक समाधान नहीं है बल्कि यह स्वयं एक शिक्षा है। यह व्यस्कों के लिये अनौपचारिक ढंग की शिक्षा है जिसकी योजना सिखाने वाले और

सीखने योग्य होना मिलकर बनाते है। प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम सरकार के कल्याण कार्यक्रमों और समाज के लोगों को देखते हुए तैयार किया जाता है। इसमें गरीब और साधारण लोगों को भौतिक जरूरतों को पूरा करने पर बल दिया जाता है। साक्षरता के साथ चेतना जागरण और पेशागत कुशलता जुड़ी हुई है।

भारत में गरीबि और निरक्षरता दो मुख्य समस्याएं है। निरक्षरता, अज्ञानता को जन्म देती है जो सभी बुराई की जड़ है। इसी कारण राष्ट्रीय प्रौढ़-शिक्षा कार्यक्रम की कल्पना, सामाजिक एवं आर्थिक विकास की प्रक्रिया में आमूल परिवर्तन लाने के साधन के रूप में की गयी है। प्रौढ़-शिक्षा के द्वारा गरीब व्यक्ति विकास कार्यों में सक्रिय रूप से भाग ले सकता है। इस बात पर बल दिया जाना चाहिए कि गरीब गरीब और निरक्षर लोग अपने उद्देश्यपूर्ण जीवन के प्रति और अधिक चेतन्य तथा जागृत हो तथा अपने कार्य कौशल को उन्नत करने के महत्व को अपनी स्थिति को सुधारने के संदर्भ में समझें।

भारत सरकार ने निरक्षरता के विरुद्ध एक सुव्यवस्थित एवं सुनियोजित अभियान शुरू करने का संकल्प लिया ताकि जो व्यक्ति अब तक शैक्षिक और सामाजिक दृष्टि से वंचित रहे है वे भी सामाजिक और सांस्कृतिक परिवर्तन

~~रूप~~ में सक्रिय भूमिका निभा सकें। साक्षरता को हर व्यक्ति के व्यक्तित्व विकास का अभिन्न अंग के रूप में मान्यता दी गयी। इसे जन आंदोलन बनाने का अभियान पूर्ण शक्ति से छेड़ा गया है।

भारत में साक्षरता के आंदोलन का इतिहास बहुत पुराना है 1940 में मौलाना अबुल कलाम आजाद ने प्रौढ़ शिक्षा के समग्र रूप यानी सामाजिक शिक्षा पर विशेष रूप से बल दिया था। उनके अनुसार सामाजिक शिक्षा से तात्पर्य मनुष्य के लिए पूर्ण शिक्षा है। वह उसे साक्षर तो बनायेगी ही साथ ही उसे बताएगी कि किस प्रकार से अधिकतम लाभ उठाया जा सके।

इस तरह हम देखते हैं कि प्रौढ़ शिक्षा से ग्रामीण समाज उन्नत होगा। हमारे देश की अधिकांश जनता गाँव में रहती है उसको साक्षर होने से हमारा समाज समर्थ होगा। प्रौढ़ शिक्षा से जहाँ एक ओर सामाजिक स्तर में सुधार होगा, वहीं आम नागरिक राजनीतिक, आर्थिक और नैतिक सोच के सुधार में उसका योगदान बढ़ेगा। व्यर्थ की समस्यायें कम होगी तथा प्रजातंत्र मजबूत हो सकेगा। ~~देश~~ ~~हर~~ देश में एकता और सद्भाव का वातावरण उत्पन्न करने में सफलता होगी। इससे देश का समुचित विकास होगा